5.4 कुटीर एवं लघु उद्योगो की समस्याएँ

भारत में लघु एवं कुटीर उद्योग के समक्ष निम्नलिखित समस्याएँ हैं–

(1) कच्चे माल की समस्या (PRoble of raw material)—भारत में लघु उद्योगों के साम
प्रमुख समस्या कच्चे माल की है । कच्चे माल की समस्या के कई पहलू हैं–प्रथम, लघु उद्यो
थोड़ी-थोड़ी मात्रा में कच्चा माल क्रय करने के कारण कच्चे माल का मूल्य अधिक देना पड़ता है। दू
मात्रा में कच्चा माल खरीदने के कारण प्रायः अच्छी किस्म का माल नहीं मिल पाता है। उदाहरण के

Scanned with CamScanner

निर्माण उद्योग में अच्छा चमड़ा या तो निर्यात कर दिया जाता है अथवा बड़ी निर्माण इकाइयों द्वारा क्रय कर लिया जाता है। फुटकर विक्रय के लिए घटिया किस्म का चमड़ा रह जाता है जिसे लघु उद्योगों को खरीदना पड़ता है । तीसरे, आयातित कच्चे माल के सम्बन्ध में लघु उद्योगों के समक्ष महत्वपूर्ण कठिनाई रहती है ।

(2) वित्त की समस्या (Problem of Finacne)—कुटीर एवं लघु उद्योगों के सामने दूसरी महत्वपूर्ण समस्या वित्त की है । व्यापारिक बैंकों से ऋण लेने में भी कई वैधानिक समस्याएँ सामने आ जाती है। अत: इन उद्योगों के लिए अधिक ब्याज पर साहुकार और महाजनों से ऋण लेना पडता है ।

(3) तकनीकी समस्या (Problem of Technique)—लघु उद्योगों के सामने तकनीकी समस्या भी है। इसमें पुराने तकनीक से उत्पादन किया जाता है। जिससे उत्पादन की मात्रा कम और घटिया किस्म की वस्तुओं का उत्पादन होता है । इसके अलवे वस्तुओं की लागत में भी वृद्धि हो जाती है ।

(4) विपणन की कठिनाइयाँ (Problems of Marketing)—लघु एवं कुटीर उद्योगों के सामने एक महत्वपूर्ण समस्या उत्पादित माल के विपणन की समस्या है। जनता की रुचियों में परिवर्तन, विज्ञापनों और प्रचार के सीमित साधन वृहद् उद्योगों की मशीन निर्मित वस्तुओं से प्रतियोगिता इत्यादि के कारण इन उद्योगों को अपने उत्पादित माल को बेचने में कठिनाई होती है ।

(5) बड़े उद्योगों से प्रतियोगिता (Competition with Large scale Industries)—बड़े उद्योगों द्वारा निर्मित माल अपेक्षाकृत सस्ता और अच्छी किस्म का होता है जिसके कारण लघु एवं कुटीर उद्योगों को बड़े उद्योगों से प्रतियोगिता करनी पड़ती है । परन्तु इस प्रतियोगिता में लघु एवं कुटीर उद्यो को हानि उठानी पड़ती है ।

(6) प्रबन्ध योजना की कमी (Lack of managerial talent)—लघु एवं कुटीर उद्योग छोटे स्तर पर चलाये जाते हैं जिन्हें प्रबन्धकीय क्षमता नहीं होती है। प्रबन्ध क्षमता की कमी के काण इन उद्योगों का ठीक से विकास नहीं हो पाता है ।

Scanned with CamScanner